दिल्ली की विद्यालयी शिक्षा में मेंटरशिप कार्यक्रम
एक अनुभव

दिव्या सिंह*

इक्कीसवीं सदी वैश्वीकरण की ओर अग्रसर है। इसलिए वर्तमान में मानव जीवन में कई बदलाव अपेक्षित हैं। इस बदलाव के दौर में विभिन्न परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक समझ का विकसित होना अति आवश्यक है। इसके लिए स्वयं से, संबंधों में, प्रकृति से परस्पर सामंजस्य ही हमें सह-अस्तित्व में सहजता व समृद्धिपूर्वक जीवनयापन की ओर ले जाता है। इस समझ को विकसित करने के लिए शिक्षा ही एक माध्यम है। शिक्षक समुदाय प्रतिबद्ध है, ऐसे शिक्षा जगत के लिए जहाँ विद्यार्थी रूपी नव-अंकुरों को यह समझ विकसित करने के अवसर प्रदान करें। इस प्रयोजन हेतु शिक्षकों व प्रशासनिक प्रमुखों की तैयारी अपेक्षित एवं आवश्यक है। हमारे देश की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समता एवं तकनीकी रूप से सक्षम समाज के निर्माण पर बल देती है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न कौशलों का अर्जन करके वैश्विक स्तर पर जीवन निर्वाह करने के लिए सामंजस्य स्थापित कर सके। शिक्षा के द्वारा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुभवी, समाधानित मानसिकता, सकारात्मक सोच, सहयोग, नेतृत्व एवं सीखने के लिए तत्पर समुदाय की आवश्यकता महसूस की गई, जो संपूर्ण शिक्षक समुदाय को साथ लेकर आगे बढ़ सके और एक शिक्षित एवं समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सके। ऐसे समुदाय को ही परामर्शदाता (मेंटर्स) की संज्ञा दी गई है। इस लेख में दिल्ली शिक्षा विभाग के एक मेंटर शिक्षक के अनुभवों को साझा किया गया है, जो विद्यालय स्तर पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में, विद्यार्थियों में अपेक्षित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में तथा विद्यालय एवं समुदाय को जोड़ने में व विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में समन्वयन करने में एक मेंटर की भूमिका पर आधारित है।

एक शिक्षक के रूप में दिल्ली के शिक्षा विभाग में कार्य करना एवं पिछले कुछ वर्षों में आए बदलावों का साक्षी बनने का लेखिका को अवसर मिला। जब से दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में मेंटर शिक्षक कार्यक्रम अस्तित्व में आया, लेखिका ने एक मेंटी के रूप में यह अनुभव किया कि अपने ही विद्यालय में अकादमिक विमर्श के अवसर मिलने लगे हैं। इस व्यवस्था में सुव्यवस्थित और सुनियोजित तरीकों से नई शैक्षणिक विधियों को सीखने, अभ्यास करने, अन्य साथियों से साझा करने, प्रशंसा करने एवं प्रशंसा पाने, नेतृत्व करने तथा नवाचारों की योजना बनाने एवं क्रियान्वयन करने को स्थान मिलने लगा है। निरंतर सीखने एवं स्वयं पर पेशेवर कौशलों का विकास करने जिसमें संप्रेषण, नेतृत्व, अवलोकन,

**मेंटर शिक्षक*, टी.जी.टी. गणित, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली 110053

रिकॉर्ड हेतु प्रारूप तैयार करने इत्यादि में निपुण होने के पर्याप्त अवसर मिलने लगे हैं। एक निपुण शिक्षक अपनी कक्षा का संचालन भी प्रभावपूर्ण तरीके से कर पाता है, अतः शिक्षा विभाग दिल्ली द्वारा चुनौतियों की पहचान करके उनके समाधान रूप में क्रियान्वित नए कार्यक्रमों में संलग्न होकर विद्यार्थियों में भी अनेक बदलाव देखने को मिले। इसके फलस्वरूप मेंटर शिक्षक कार्यक्रम में विश्वास बढ़ने लगा। एक शिक्षक के तौर पर लेखिका ने स्वयं को स्वतंत्र और निपुणता की ओर अग्रसर महसूस किया।

इसके पश्चात् लेखिका को मेंटर शिक्षक कार्यक्रम का प्रत्यक्ष तौर पर हिस्सा बनने का भी मौका मिला अर्थात शिक्षण विभाग द्वारा आवेदन हेतु निमंत्रण आया, जिसमें उन्होंने आवेदन किया। इस आवेदन पत्र में अपने सर्वोत्तम कक्षा-कक्ष शिक्षण-अधिगम अभ्यास, मेंटर की भूमिका के प्रति सजगता, दिल्ली शिक्षा में हुए सुधारों के विषय में लिखना था और इंटरफेस की एक सुनियोजित प्रक्रिया से गुज़रते हुए इसमें लेखिका ने भाग लिया। सभी चयनित मेंटर्स के स्वागत के साथ शीर्ष नेतृत्व से प्रेरणा एवं अभिप्रेरणा हेतु मिलना हुआ, जिसमें इस कार्यक्रम की पृष्ठभूमि एवं अपेक्षाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। दिल्ली की विद्यालयी शिक्षा में क्रियान्वित विभिन्न नए पाठ्यक्रम जो मानसिकता पर आधारित हैं, उनसे क्रमवार कोर टीम द्वारा अंतक्रिया में शामिल हुए ताकि अपने मेंटी शिक्षकों को उन्हीं के विद्यालयों में छोटे समूहों में मार्गदर्शन कर सकें। कक्षाओं में यह पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु अपने मूलभाव के साथ विद्यार्थियों तक पहुँच रहे हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कक्षा अवलोकन, प्रतिपुष्टि, पुनः अवलोकन एक मेंटर की भूमिका में शामिल है। जिला एवं राज्य स्तर पर भी मेंटर द्वारा विद्यालयों में हो रही गतिविधियों, उनके प्रभावों, चुनौतियों एवं समाधान पर बातचीत के पूरे अवसर उपलब्ध होते हैं, इसमें एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.आई.टी. जैसे संस्थानों की भी बड़ी भूमिका है।

मेंटर शिक्षक कार्यक्रम

मेंटर शिक्षक कार्यक्रम के माध्यम से मेंटर शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर मास्टर प्रशिक्षक के रूप में भी तैयार किया जाता है, जो विशेषज्ञ या संसाधन व्यक्ति के रूप में विषयवस्तु लिखने एवं प्रशिक्षण देने में भी योगदान देते हैं। इन सभी गतिविधियों के दौरान एक मेंटर शिक्षक एक उत्कृष्ट शिक्षक विशारद के रूप में विकसित हो रहा होता है। मेंटर शिक्षा कार्यक्रम की एक विशेष बात यह है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह मेंटर शिक्षक विभिन्न शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, शैक्षणिक संस्थाओं, शिक्षा जगत के सभी हितधारकों के संपर्क में आते हैं और स्वयं ही बहुत कुछ सीख रहे होते हैं और उनके अमूल्य विचार भी अन्य व्यक्तियों के साथ साझा होते हैं।

दिल्ली के मेंटर शिक्षक कार्यक्रम में जीवन विद्या शिविर एक महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य चरण है। यह जीवन विद्या शिविर ए. नागराज के मध्यस्थ दर्शन से परिचय कराता है, जिसमें मानवीय मूल्यों पर चर्चा होती है। यह मध्यस्थ दर्शन व्यक्ति में सह-अस्तित्व की संकल्पना विकसित करता है। यह हमें इस बात के लिए तैयार करता है कि हम केवल माने नहीं बल्कि स्वयं जी कर जानें।

इस प्रकार दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था का मेंटर शिक्षक कार्यक्रम पहले स्वयं पर कार्य करने, स्वयं के

प्रति जागरूक होने पर ध्यान दिलाता रहता है ताकि व्यक्ति अपने साथ ही साथ शिक्षकों की स्थिति को समझकर समाधान और सहायता प्रदान कर सकें और उनकी स्वयं समाधान के साथ जीने में मदद कर सकें।

मेंटरिंग कार्यक्रम की अवधारणा एक सकारात्मक विचार भी है, जो परस्पर विश्वास, सहयोग, निदान, सम्मान, प्रशंसा, सजगता, सहजता जैसे मानवीय मूल्यों व कौशलों को धरातल पर जीवंत रूप से दृष्टिगोचर होने की संभावना का समर्थन करता है।

विद्यालय स्तर पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सुगम बनाने में मेंटर की भूमिका

एक मेंटर शिक्षक 5 से 6 विद्यालयों के साथ जुड़ा होता है। उनके विद्यालय स्तर पर कार्य करने की भूमिका में विद्यालय की शिक्षा को पढ़ाते समय कक्षा-कक्ष में अवलोकन करना एवं शिक्षकों को प्रतिपुष्टि देना, उनकी चुनौतियों को सुनना व समाधान के लिए विषयवार बैठकों में चर्चा करना शामिल है। मेंटर शिक्षक सीधे तौर पर विद्यार्थियों से भी बातचीत करके उनके सीखने की प्रक्रिया के स्तर का अवलोकन तथा आकलन करते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अवलोकन करते समय मेंटर शिक्षक कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देते हैं, जिनमें विद्यार्थियों की कक्षा में सहभागिता, सक्रिय अधिगम, कक्षा में शिक्षक के बोलने एवं विद्यार्थियों के बोलने के समय का अनुपात, कक्षा में विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसरों की उपलब्धता, विद्यार्थियों के लिए मानसिक सुरक्षात्मक वातावरण इत्यादि सम्मिलित हैं।

मेंटर शिक्षक को कक्षा का अवलोकन एवं शिक्षकों को प्रतिपुष्टि देना, सिखाने के लिए मंडलीय शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा मॉड्यूल तैयार किए गए हैं। शिक्षक समुदाय जिला स्तर पर बैठक करके इन मॉड्यूल पर चर्चा करते हैं, समझ बनाते हैं, शिक्षकों की स्थिति को समझते हुए उनकी चुनौतियों पर विचार करते हुए उपयुक्त तरीकों पर एक युक्ति तैयार करते हैं, जिससे शिक्षकों को अपनी कक्षा में अवलोकन कर्ता के आने से असहजता महसूस न हो और वे अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया व युक्तियों के लिए प्रतिपुष्टि स्वीकार करने के लिए तैयार भी हों। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने के लिए मेंटर शिक्षक अपने मैंटी शिक्षकों को मित्रमंडली (पीयर ग्रुप) द्वारा अवलोकन करने की प्रक्रिया को भी सुनिश्चित करते हैं, जिससे कि एक ही विषय के शिक्षक एक-दूसरे की कक्षाओं का अवलोकन कर सीख सकें और परस्पर सुझाव भी साझा कर सकें। किंतु इस प्रक्रिया के लिए सभी शिक्षकों में स्वीकार्यता सुनिश्चित करना एक चुनौती भरा कार्य है। इस चुनौती का सामना करने के लिए मेंटर शिक्षक एक सकारात्मक योजना तैयार करते हैं, जिसके अंतर्गत वे मित्रमंडली द्वारा किए गए अवलोकनों की उपयोगिता के प्रति शिक्षकों को जागरूक करने हेतु गोष्ठियाँ आयोजित करते हैं, इन गोष्ठियों में छोटे-छोटे समूह में चर्चा की जाती है। यह समूह विषयवार भी हो सकते हैं एवं समय की उपलब्धता के अनुसार उपस्थित शिक्षकों के अनुसार भी बनाए जा सकते हैं। मेंटर शिक्षक कार्यक्रम के अंतर्गत एक मेंटर शिक्षक विद्यालय, विद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के समय का सम्मान करते हुए अपनी उपस्थिति को अवरोध के रूप में प्रकट नहीं होने देते हैं। आपसी समझ से उपयुक्त समय पर ही

इस प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है जिससे शिक्षक इस गोष्ठी को स्वयं के लिए उपयोगी व लाभदायक समझकर सहभागी बनें। इन गोष्ठियों में सभी सहयोगी अपने विचार रखते हैं और एक-दूसरे को सुनते हैं तथा किसी चुनौती के निवारण के लिए समाधान हेतु बातचीत करते हैं। इसी दौरान शिक्षकों के द्वारा किए गए नवाचारों की प्रशंसा भी की जाती है और अपने साथियों के साथ उन नवाचारों को साझा किया जाता है। कक्षा-कक्ष अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में प्रशंसा का बड़ा योगदान होता है, इसके महत्व को समझते हुए मेंटर शिक्षक विभिन्न अवसरों पर एवं हितधारकों के समक्ष अपने मैंटी शिक्षकों के नवाचारों का प्रस्तुतीकरण एवं प्रशंसा करते हैं। लेखिका ने इसके सकारात्मक प्रभाव अनुभव किए हैं।

विद्यार्थियों में अपेक्षित सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में मेंटर की भूमिका

विद्यार्थियों में अपेक्षित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने के लिए सीखने के समुचित अवसर उपलब्ध कराना एक शिक्षक की ज़िम्मेदारी होती है और इसके लिए शिक्षक को एक प्रभावी योजना भी तैयार करनी होती है। मेंटर शिक्षक द्वारा इस कार्य में शिक्षकों की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की जाती है। प्रत्यक्ष रूप में तो मेंटर शिक्षक कक्षाओं का अवलोकन करके शिक्षकों को प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं, एवं विभिन्न गोष्ठियों में उदाहरण सहित योजनाएँ बनाने में सहायता भी करते हैं। यह सहायता इस रूप में की जाती है कि सभी शिक्षक एक-दूसरे से अपनी-अपनी योजनाएँ प्रस्तुतीकरण के द्वारा साझा करें, उन पर चर्चा करें, चिंतन-मनन करें और अपनी कक्षा में उनका क्रियान्वयन करके इनके परिणामों को जाँचें तथा इन्हें प्रयोग में लाएँ। विद्यार्थियों के साथ भी मेंटर शिक्षक सहभागी बनते हैं और डेमो कक्षाएँ प्रस्तुत करते हैं, जिससे अन्य शिक्षक मेंटर शिक्षक द्वारा प्रयुक्त युक्तियों को भली-भाँति कक्षा-कक्ष की मूल स्थिति में देख और समझ सके और वे स्वयं भी कक्षा विशेष की स्थितियों को एवं आने वाली चुनौतियों से परिचित हो सके।

हालाँकि डेमो कक्षा या सुझाव देने के साथ-साथ आवश्यकता है एक अध्यापक के स्व-अभिप्रेरित और आत्मविश्वासी होने की और ऐसा होने के लिए एक मेंटर शिक्षक अपने मेंटी शिक्षकों के साथ बातचीत करके, उनकी समस्याओं को सुनकर उचित निर्णय लेने, सही समय पर सही प्रतिपुष्टि देकर तथा उचित अवसर पर शिक्षकों की आवश्यकता को शिक्षा प्रशासन तंत्र के समक्ष प्रस्तुत कर उनकी मदद करते हैं। एक आत्मविश्वास से भरा शिक्षक अभिप्रेरित होकर अपना कार्य प्रभावी ढंग से करता है और अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में सहयोग करता है। एक मेंटर के लिए यह चुनौती होती है कि क्या सभी शिक्षक नवाचार, नई युक्ति, नए पाठ्यक्रम की पृष्ठभूमि को समझकर, (उनकी आज के समय में उपयोगिता एवं आवश्यकता को जानकर) आसानी से स्वीकार कर पाते हैं? इस चुनौती का समाधान करने के लिए एक मेंटर शिक्षक प्रयासरत रहता है।

जो शिक्षक आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की विभिन्न युक्तियों को सीखना चाहते हैं, उनके लिए मेंटर शिक्षक काफ़ी मददगार सिद्ध होते हैं और उनका

काम भी आसान होता है। क्योंकि सीखने के लिए तैयार व्यक्ति विकासशील मानसिकता का होता है, जिसे केवल एक सहायक की आवश्यकता होती है और वे मेंटर शिक्षक को उस रूप में देख पाते हैं और वे परस्पर कार्य में जुटकर अधिगम प्रतिफल को प्राप्त करने में अन्यों की तुलना में जल्दी सफलता पा लेते हैं और दूसरों के लिए उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत भी होते हैं। जिस प्रकार एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है, उसी प्रकार एक मेंटर शिक्षक अपने शिक्षकों को संकाय गोष्ठियों द्वारा अपने विषय में निपुण होने के अवसर प्रदान करता है, जिनमें उद्देश्यपूर्ण चर्चाएँ एक सक्रिय वातावरण में होती हैं। इस दौरान शिक्षक अपनी कक्षा की केस स्टडी भी साझा करते हैं, जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं और व्यवहारों पर चर्चा होती है।

अप्रत्यक्ष रूप से मेंटर शिक्षक अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति हेतु विभिन्न स्तरों पर कार्य करते हैं जैसे सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण के दौरान अधिगम प्रतिफलों पर चर्चा कर उनकी समझ विकसित करना कि केवल पुस्तकों में वर्णित पठन सामग्री को ही साध्य न मानना अपितु अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति हेतु इन पठन सामग्री को साधन के रूप में प्रयोग करना। इन अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार की गई गतिविधियों व परियोजनाओं को कक्षा में प्रभावी ढंग से प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है। एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विभिन्न पाठ्य सामग्रियों को विकसित करने में मेंटर शिक्षकों का भी योगदान होता है। ताकि यह सामग्री शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रभावी हो।

विद्यालय को समुदाय से जोड़ने में मेंटर की भूमिका

शिक्षा का एक प्रमुख स्तंभ समुदाय भी होता है, जिसमें प्रत्यक्ष तौर पर विद्यार्थियों के अभिभावक शामिल होते हैं। विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकों में से समुदाय भी एक है। विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य के रूप में अभिभावक, विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षक शामिल होते हैं। एक निश्चित अवधि पर होने वाली गोष्ठियों में मेंटर शिक्षक भी आवश्यकता होने पर इनमें शामिल होते हैं। आवश्यकता होने से अभिप्राय यह है कि विद्यालय प्रमुख किसी चुनौती के निवारण हेतु या किसी नवाचार को साझा करने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ स्पष्टता से प्रभावपूर्ण बातचीत के लिए मेंटर शिक्षक की भूमिका सुनिश्चित करते हैं। इसके अतिरिक्त स्वयं मेंटर शिक्षक भी कई मुद्दों को लेकर अभिभावकों तक पहुँचने के लिए इस प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ बातचीत करने के लिए विद्यालय प्रमुख की अनुमति से इन गोष्ठियों में उपस्थित होते हैं। इसका एक उदाहरण है, कोविड-19 के दौरान, लॉकडाउन के समय ऑनलाइन पढ़ाई में सहयोग हेतु अभिभावकों में जागरुकता के लिए मेंटर शिक्षकों ने इस प्रबंधन समिति के सदस्यों से बात करके एवं उनके सहयोग से तथा विद्यालय स्तर पर अभिभावकों के साथ कार्यशाला आयोजित करके ऑनलाइन माध्यम में भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के सुचारू रूप से चलने के लिए प्रयास किए।

शिक्षकों के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम— एक अवसर

दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में मेंटरशिप कार्यक्रम शिक्षकों के लिए एक ऐसा अवसर है जिसमें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रयासरत विकासशील मानसिकता वाले, सकारात्मक सोच, शिक्षा के बदलते स्वरूप में योगदान के लिए तत्पर, चुनौतियों का सामना करने में सक्षम एवं मानवीय संबंधों में समन्वयक के रूप में प्रस्तुत होने के लिए इच्छुक शिक्षकों को सेवाएँ प्रदान करने एवं अपनी शैक्षणिक पेशेवर योग्यता को और अधिक निखारने के लिए विभिन्न अवसर मिलते हैं। यह कार्यक्रम शिक्षा व्यवस्था के सभी हितधारकों के सहयोग के साथ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक ही दिशा में उन्मुख होकर कार्य करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है। इस कार्यक्रम में मेंटर शिक्षक एक समुदाय के रूप में उभरा है। यह समुदाय विभिन्न कड़ियों को परस्पर जोड़ने का कार्य भली-भाँति करता है। किसी एक मेंटर साथी को यदि किसी चुनौती का सामना करना होता है तो वह इस समुदाय की मदद से एक व्यवस्थित रूप से बहुत ही कम समय में समाधान तक पहुँचता है।

तकनीकी का भी इसमें बड़ा योगदान है। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म की मदद से संप्रेषण अत्यधिक तीव्र गति से होता है। विभिन्न शैक्षणिक आयोजनों को सफल बनाने में संप्रेषण के नए माध्यमों का प्रयोग मेंटर शिक्षक समुदाय सुव्यवस्थित तरीके से करते हैं। यह समुदाय अक्सर अपनी चुनौतियों को पहचान कर उन पर कार्य करने के लिए कार्य योजनाएँ तैयार करते हैं इस कार्य में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाएँ, जैसे— डाइट, एस.सी.ई.आर.टी. भी सहायता प्रदान करती हैं। इन सभी प्रक्रियाओं से गुज़रते हुए मेंटर शिक्षक स्वयं में बहुत से सकारात्मक बदलाव महसूस करते हैं। दो वर्ष के लिए चुने गए मेंटर शिक्षक कई बार विभागीय आदेश के अनुसार अपनी सेवाएँ कुछ और समय के लिए जारी रखते हैं। इस दौरान वे स्वयं में कुछ ऐसे बदलाव देख पाते हैं जो उन्हें विद्यालयों में पुनः अपनी सेवाएँ देने के लिए निपुण बनाते हैं।

ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि मेंटर शिक्षक कार्यक्रम विभिन्न स्तरों पर शैक्षणिक गतिविधियों के अवलोकन के अवसर प्रदान करता है इसके साथ ही विभिन्न हितधारकों की शिक्षा व्यवस्था में भूमिका, भूमिका निर्वहन में आने वाली चुनौतियाँ एवं नवाचारों के क्रियान्वयन की पूरी प्रक्रिया का निकट से अवलोकन करने का अवसर भी देता है। विभिन्न प्रक्रियाओं में संलग्न होने के कारण मेंटर शिक्षक बहुत से कौशलों को अर्जित करने में सफल होते हैं। यही कौशल एवं निपुणता उन्हें एक बेहतर पेशेवर शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए तैयार करती है। इस प्रकार यह कार्यक्रम व्यवस्था में से ही स्वेच्छा से सहभागी बनने वाले शिक्षकों को कुछ समयावधि के लिए यह चुनौतीपूर्ण कार्य देकर, जिसमें हर दिन कुछ नया करने एवं सीखने को मिलता है, भविष्य के बेहतर शिक्षकों का निर्माण करता है।

एक मेंटर शिक्षक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा व्यवस्था में अपना योगदान विभिन्न सोपानों पर देते हैं। इस यात्रा में एक व्यक्ति के रूप में वे स्वयं को भी निखार रहे होते हैं और व्यवस्था में अन्य हितधारकों के साथ समन्वय करते हुए विद्यार्थियों के हित में प्रभावी शिक्षा के सकारात्मक और सहज वातावरण का निर्माण कर रहे होते हैं।

स्वयं सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होते हुए अपने मेंटी शिक्षकों की चुनौतियों को सुनकर उनके निवारण में चर्चाओं के माध्यम से सहायता प्रदान करना तथा व्यवस्था के संस्थागत सहयोग एवं संसाधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना इनके प्रयासों में शामिल होता है। मेंटर शिक्षक अपनी भूमिका का निर्वाह उचित समय और स्थान पर उचित बात कहना, नवाचारों को प्रफुल्लित करने के लिए प्रशंसा की परंपरा को विकसित करना, समय-समय पर अभिप्रेरित करना, वर्तमान में विद्यार्थियों की आवश्यकता को पहचान कर उनके अनुरूप योजनाएँ तैयार करना एवं नई युक्तियों को सीखकर कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रभावपूर्ण तरीके से प्रयोग करने में सक्षम बनाना, ऐसे बहुत से उद्देश्यपूर्ण कार्य करते हैं।

मेंटरशिप कार्यक्रम से उभरते आयाम

इस कार्यक्रम से जुड़े होने के कारण लेखिका ने यह अनुभव किया कि इसमें बहुत से आयाम उभर रहे हैं, जैसे— समाज में शिक्षकों के प्रति सम्मान, विद्यार्थी केंद्रित उपागम, नए पाठ्यक्रमों का निर्माण, प्रक्रियाओं पर ध्यान, सभी की सहभागिता, असहमति के प्रति स्वीकार्यता, नवाचारों को सम्माननीय स्थान, शिक्षकों की भी निर्णायक भूमिका, शिक्षक— एक शोधार्थी के रूप में, शिक्षक— एक पाठ्यक्रम निर्माता के रूप में, विद्यार्थी— एक उद्यमशील व्यक्ति के रूप में, शिक्षा— एक समृद्ध जीवन व्यतीत करने की युक्ति के रूप में आदि।

और भी हैं बहुत से आयाम,
दृष्टिकोण का है यह परिणाम।
शिक्षा ही केवल एक ऐसा माध्यम,
जो बनाती है नागरिक उत्तम।
शिक्षक की भूमिका नहीं है आम,
परामर्श से बनता प्रभावी काम।
मेंटर देते परामर्श में उपाय,
जिसका स्वयं प्रमाण देते विद्यालय।

संदर्भ

एजुकेशन रिवोल्यूशन. https://www.edudel.nic.in/welcome_folder/delhi_education_revolution.pdf शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. *एम.टी. प्रोग्राम*, दिल्ली सरकार. 25 सितंबर 2023 को पुन: प्राप्त किया गया. http://scert.delhi.gov.in/scert/mt-program को देखा गया।

शिक्षा निदेशालय. स्कूल शाखा. 2018. *रोल्स, रिपोर्टिंग एंड रिव्यू सिस्टम फ़ॉर मेंटर टीचर्स फ़ॉर द अकेडमिक सेशन 2018–20, परिपत्र* http://scert.delhi.gov.in/circulars 6.09.2023 को देखा गया।